<u>वैश्विक शांति का संवाहक है डायस्पोरा- प्रो.ए.अरविंदाक्षन</u>

हिंदी विवि में आयोजित 7वें अंतरराष्ट्रीय लेखक महोत्सव में दुनिया भर के लेखकों ने की शिरकत

डायस्पोरा अध्ययन विभाग, इंडिया इंटर-कॉन्टिनेंटल कल्चरल एसोशिएसन व श्रुति का संयुक्त आयोजन

वर्धा, 26 नवम्बर 2011: वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के डायस्पोरा अध्ययन विभाग, इंडिया इंटर-कॉन्टिनेंटल कल्चरल एसोशिएसन, चंडीगढ़ व श्रुति-द स्कूल ऑफ म्यूजिक, गुवाहाटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय (26-27 नवंबर) 7वें अंतरराष्ट्रीय लेखक महोत्सव के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विवि के प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन ने शनिवार को कहा कि डायस्पोरा वैश्विक शांति का संवाहक हैं।

हिंदी विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में आयोजित महोत्सव के दौरान इंडिया इंटर-कॉन्टीनेन्टल कल्चरल एसोशिएसन के निदेशक देव भारद्वाज, गांधी विचार परिषद, वर्धा के निदेशक भरत महोदय, डायस्पोरा के शिक्षाविद् डॉ.जयंत कर शर्मा व हिंदी विवि के डायस्पोरा अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ.राजीव रंजन राय मंचस्थ थे।

देश-विदेश से आए लेखकों को संबोधित करते हुए प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन ने कहा कि यह विश्वविद्यालय गांधी जी के नाम पर स्थापित है। हम गांधी जी के आदर्शों व जीवन मूल्यों को दुनिया भर में प्रसारित करने का प्रयास कर रहे हैं। विवि की अवधारणा में ज्ञान, शांति, मैत्री सन्निहित है। इसी अवधारणा के तहत एक बेहतर समाज निर्माण की दिशा में हम प्रयासरत हैं। विवि में डायस्पोरा अध्ययन विभाग है, इसमें अनुसंधान की अपरंपार संभावनाएं हैं, का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया में मैत्री व सांस्कृतिक समन्वय को स्थापित करने में डायस्पोरा अध्ययन विभाग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

गांधी विचार परिषद, वर्धा के निदेशक भरत महोदय ने 'गांधी और विश्व शांति' विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि गांधी जी 14 वर्षों तक यहां रहे। उन्होंने 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' को चरितार्थ किया। गांधी जी ने विश्व

शांति के लिए सत्य और अहिंसा का मार्ग दिया। उन्होंने कहा कि गांधी शांति के लिए जीते हैं। आज हम जैसे-जैसे विज्ञान, तकनीक और प्रौद्योगिकी के करीब जा रहे हैं दुनिया में अशांति बढ़ती जा रही है। हम बारूद की ढ़ेर पर खड़े हैं, ऐसे में वैश्विक शांति के लिए अहिंसक मार्ग तलाशने की जरूरत है। भारत के प्रति प्रेम उजागर करने तथा वसुधैव कुटुम्बकम की परंपरा पर फूल चढ़ाने के लिए दुनियाभर से आए लेखकों का स्वागत करते हुए इंडिया इंटर-कॉन्टीनेन्टल कल्चरल एसोशिएसन, चंडीगढ़ के निदेशक देव भारद्वाज ने कहा कि आप लेखकगण दुनिया में भाईचारा के लिए दिशानिर्देश देते हैं। महात्मा गांधी ने अहिंसा के द्वारा दुनिया को एक नई दिशा दी। उनके नाम पर यह विवि है। कुलपति जी से यह प्रस्ताव दिया तो उन्होंने इसे एक महत्वपूर्ण आयोजन की संज्ञा देते हुए सहर्ष स्वीकार किया, हम सभी उनके आभारी हैं।

उड़ीसा से आए डायस्पोरा के शिक्षाविद् डॉ.जयंत कर शर्मा ने कहा कि आज 21वीं शताब्दी में गांधी की प्रासंगिकता पर सवाल उठ रहे हैं। हालांकि यह भी सवाल उठना चाहिए कि आखिर आज गांधी क्यों पैदा नहीं हो रहे हैं। सेवाग्राम आश्रम को देखने के बाद लगा कि इतने बड़े आदमी कितने शालीन व सरल थे। यह धरती और विवि हमारे लिए मंदिर के समान हैं। डायस्पोरा पर विशेष चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि रोजी-रोटी कमाने के उद्देश्य से फिजी, मॉरीशस और सुरीनाम जैसे देशों में भारतीय प्रवास हुए पर आज ग्लोबलाइजेशन के दौर में पढ़ाई और संचार प्रौद्योगिकी के कारण रोजगार के लिए लंदन, जर्मनी सहित कई देशों में जा रहे हैं। उनके पास चुनौतियां आ रही हैं कि वे कैसे अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखें। उन्होंने आशा जतायी कि डायस्पोरा विश्व को शांति प्रदान करने में अपनी महती भूमिका अदा करेगा। मंच का संचालन श्रुति-द स्कूल ऑफ म्यूजिक, गुवाहाटी के निदेशक डॉ. परिणिता गोस्वामी ने किया तथा विवि के डायस्पोरा अध्ययन विभाग के डॉ. राजीव रंजन राय ने आभार व्यक्त किया। दीप प्रज्वलित कर महोत्सव की शुरूआत की गई। अतिथियों का स्वागत खादी वस्त्र, शॉल श्रीफल प्रदान कर किया गया। मद्रास विवि के संगीत विभाग की डॉ.राजश्री श्रीपथी व हिंदी विवि के अखिलेश दीक्षित द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण ने श्रोताओं को संगीत के रस में डुबो दिया। इस अवसर पर देश-विदेश से आए लेखक व विवि के शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मी, शोधार्थी व विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

देश-विदेश के 60 प्रतिनिधियों ने की सहभागिता- हिंदी विवि के हबीब तनवीर सभागार में आयोजित दो दिवसीय आयोजन में देश-विदेश के 60 से अधिक लेखक तथा प्रतिभागी सहभागिता कर रहे हैं। 'डायस्पोरा साहित्य तथा विश्वशांति में महात्मा गांधी का योगदान' विषय पर आधारित महोत्सव में आस्ट्रेलिया से एंडी जैकसन, एमेश डेनिस (नाइजेरिया), डिंको (क्रोएशिया), यिवुला लोएनोउ पस्तालिडोव (साइप्रस) सहित कई देशों के लेखक तथा डॉ. ए. एस. कुशवाह, अमेया विक्रम नंदन भुयान, अनिता विजय ठक्कर, भूपेन महापात्रा, देवमणी पाण्डेय, डॉ. हरिचंद्र बोरकर, प्रो.जी.ए. घनश्याम, हिरामन तुलसीराम लांजे, आई.एस. तियागोम, जनार्दन पठानीया, कुंति, मो खजामोइनुद्दीन, एम. आर. अरूणा कुमारी, नागो गोविंद थुटे, के.एल. सत्यवती, प्रिया अग्रवाल, प्रो. नीर शबनम कुमारी, पी.एल. श्रीधरन परोकोड, फिलिपोस माइकेल, पोटलुरू सुब्रमण्यम, प्रिया अग्रवाल, प्रो. राजगुरू संतोष पुंडलिक, डॉ.राजश्री श्रीपति, सुधीर बी. चव्हान, प्रो.एस.बी. सिंह, डॉ. शुक्ला भट्टाचार्य, डॉ.स्नेहसुधा कुलकर्णी, डॉ.तृप्ति त्रिपाठी, डॉ. वेमपल्ली गंगाधर, डॉ. विजय कुमार रॉय सहित भारत के विभिन्न प्रांतों के विद्वान लेखक सहभागिता कर रहे हैं।

-अमित विश्वास